Question

Page :
Date: / /

प्र० - 1. हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास / विकास क्रम / प्रेमचन्द का स्थान -

उ० - भूमिका :- 18वीं सदी के अंत में यूरोप में उपन्यास लिखने की परंपरा का विकास हुआ। सर्वप्रथम इस विधा ने बांगला साहित्य को प्रभावित किया। बाद में बांगला साहित्य से प्रभावित होकर हिन्दी साहित्य में भी उपन्यास लिखने की परंपरा का विकास हुआ। उपन्यास लिखने की परंपरा संस्कृत भाषा से नहीं आई। संस्कृत पाली प्राकृत तथा अपभ्रंश आदि में नीति कथाएँ और आख्यान आदि काफी मात्रा में मिलते हैं। लेकिन उपन्यास नहीं मिलते। हिन्दी में जो प्रथम उपन्यास है। उस पर मतभेद है। श्रद्धाराम फिल्लौरी ने 1877 में 'भाग्यवती' उपन्यास लिखा। लाला श्री निवास दास ने 1882 ई० में 'परीक्षा गुरु' उपन्यास लिखा। श्रद्धाराम फिल्लौरी के उपन्यास में उपन्यास के सभी गुण विद्यमान नहीं थे। इसके विपरीत 'परीक्षा गुरु' उपन्यास के गुणों पर खरा उतरता है। इसलिए इसे हिन्दी साहित्य का पहला उपन्यास माना जाता है।

हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम को प्रेमचन्द को आधार बनाकर चार भागों में विभाजित कर सकते हैं।

1. प्रेमचन्द पूर्व युग (सन् 1877 - 1918)
2. प्रेमचन्द युग (सन् 1918 - 1936)
3. प्रेमचन्दोत्तर युग (सन् 1936 - 1950)
4. आधुनिक युग (सन् 1950 से अब तक)

Page :
Date: / /

1. प्रेमचन्द पूर्व युग → बालकृष्ण भट्ट, श्रद्धाराम फिल्लौरी, लाला श्री निवास दास आदि ने इस काल में उपन्यास लिखे। श्रद्धाराम फिल्लौरी ने 'भाग्यवती' नामक उपन्यास लिखा, जिसमें बीज रूप में उपन्यास के गुण देखे जा सकते है। लाला श्री निवास दास ने 'परीक्षागुरु' नामक उपन्यास लिखा। आगे चलकर राधाकृष्ण दास ने 'निसहाय हिन्दू' और बालकृष्ण भट्ट ने 'नूतन ब्रह्मचारी' उपन्यास लिखा। अनुवादिक व मौलिक उपन्यास भी लिखे गए। देवकी नंदन खत्री द्वारा रचित उपन्यास 'चन्द्रकांता' काफी लोकप्रिय हुआ। चन्द्रकांता तिलिस्मी व जासूसी पर आधारित उपन्यास था। अधखिला सिर्फ उपाध्याय ने 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' तथा 'अधखिला फूल' उपन्यास लिखा। प्रेमचन्द का पूर्व युग में प्रायः सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलिस्मी, जासूसी तथा भाव प्रधान उपन्यास काफी संख्या में लिखे गए।

2. प्रेमचन्द युग :- प्रेमचन्द युग में सामाजिक उपन्यास सबसे अधिक लिखे गए। प्रेमचन्द ने जासूसी तथा तिलिस्मी को पिटारी में बंद हिन्दी उपन्यासों को मुक्त किया और उसे सामान्य जन-जीवन से जोड़ा। प्रेमचंद ने नारी समस्या, दहेज प्रथा, शोषण, कृषक समस्या आदि पर आधारित उपन्यास लिखे। प्रेमचन्द द्वारा रचित 'गोदान' उपन्यास हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है। इसमें इसमें उपन्यासकार ने ग्राम्य जीवन के संदर्भ में जमींदारी प्रथा पर प्रकाश डाला है। प्रेमचंद युग

Page :
Date: / /

के अन्य उपन्यासकारों में विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, जयशंकर प्रसाद और सियाराम शरण गुप्त आदि के नाम गिनवाए जा सकते हैं। माँ और 'भिखारणी' कौशिक जी के दो प्रसिद्ध उपन्यास है। कंकाल, तितली, इरावती जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध उपन्यास है। सियाराम शरण गुप्त ने 'गोद' 'नारी' उपन्यास लिखे है। जिनमें नीति और सदाचार पर बल दिया गया है। इस प्रकार इस काल में सामाजिक तथा ऐतिहासिक उपन्यास प्रचुर मात्रा में लिखे गए।

3. प्रेमचन्द्रोत्तर युग :- इस युग में हिन्दी उपन्यास का अत्यधिक विकास हुआ तथा सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक तथा आँचलिक उपन्यास काफी संख्या में लिखे गए।

सामाजिक एवं ऐतिहासिक — आचार्य चतुरसेन शास्त्री इस युग के उल्लेखनीय उपन्यासकार है। हृदय की प्यास, दिल्ली का दलाल, बधुवा की बेटी आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास है। लेकिन भगवती चरण वर्मा ने 'चित्रलेखा' उपन्यास लिखकर हिन्दी उपन्यास को साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की। अब उपन्यासकार व्यक्ति के अन्तर्जगत में रूचि दिखाने लगे। फलस्वरूप मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों की परम्परा का श्री गणेश हुआ। इस संदर्भ में इलाचन्द्र जोशी का उल्लेख करना उचित होगा। जिन्होंने लज्जा, सन्यासी, प्रेत और छाया, परदे की रानी आदि उपन्यास लिखे। इस परंपरा को आगे बढ़ाने वालो में जैनेन्द्र कुमार का विशेष महत्व है। सुनीता, सुखदा, त्याग-पत्र आदि। इनके प्रमुख उपन्यास है।

मार्क्सवादी — मार्क्सवादी :- चिन्तन से प्रभावित लेखकों में यशपाल जी का नाम गिनवाया जा सकता है।

Page :
Date: / /

दादा कामरेड, पार्टी कामरेड, देशद्रोही, यशपाल जी के प्रगतिवादी उपन्यास है। जिनमें मार्क्स के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। इस परंपरा के अन्य उपन्यासकारों में राहुल सांकृत्यायन, अमृतराय आदि उपन्यासकारों के नाम गिनाए जा सकते है।

आंचलिक → आंचलिक उपन्यासों की परम्परा में काफी उपन्यास लिखे गए है। इस प्रकार के उपन्यासों में पृथ्वी के किसी पिछड़े हुए भू-भाग की समस्याओं का वर्णन किया जाता है। हिन्दी के आँचलिक उपन्यासकारों में फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन आदि के नाम गिनाए जा सकते है। मैला - आंचल और प्रति - परिकथा आदि रेणु के प्रसिद्ध उपन्यास है। इस प्रकार इस युग में सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक तथा आंचलिक उपन्यास काफी संख्या में लिखे गए।

4. आधुनिक युग :- स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी उपन्यास लेखन में अत्यधिक वृद्धि हुई। इस युग में नई पीढ़ी के उपन्यासकार हमारे सामने आए है। आधुनिक पीढ़ी के उपन्यासकारों में मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, श्रीमती मन्नू भंडारी आदि के नाम गिनाए जा सकते है। 'अंधेरे बंद कमरे में' राकेश जी का प्रसिद्ध उपन्यास है। 'मानव चला गया' मन्नू भण्डारी का उल्लेखनीय उपन्यास है। अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में उपन्यास काफी मात्रा में लिखे गए। आधुनिक युग में बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, मध्यवर्ग को आधार बनाकर उपन्यास लिखे गए।

निष्कर्ष :- हिन्दी का वर्तमान उपन्यास साहित्य अनेक विधाओं में अग्रसर है। आज लोग उपन्यास और कहानी आदि पढ़ने में ही रुचि रखते है। लेकिन कुछ उपन्यासकार

Page :
Date: / /

अति यथार्थवादिता तथा प्रयोगधर्मिता के नाम पर अश्लीलता और कामुक उपन्यास लिखने लगे हैं। जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। फिर भी हम कह सकते हैं कि उपन्यासों का भविष्य काफी उज्जवल है।